आधुनिक सामाजिक परिवेश में नैतिकता, शान्ति, सदभाव और मूल्य शिक्षा

डॉ0 सुविता कुमारी*

सारांश

शिक्षा एक सापेक्ष चेतन अथवा अचेतन मनावैज्ञानिक, सामाजिक, वैज्ञानिक दार्शनिक एवं जीवन मूल्यों सम्बन्धी प्रक्रिया है जिसके द्वारा सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास सम्भव होता है। जिसके द्वार ही हमारे ऋषि मुनियों और धर्माचारों ने नीतिपरक शिक्षा का प्रसार किया जिससे हम सचरित्र गुणवान विकासोन्मुख हो सके। पहले एक ही शिक्षक सब तरह की शिक्षा (नैतिक, व्यवहारिक, सामाजिक, विकासोन्मुखी, वैज्ञानिक एवं तकनीकी शिक्षा) देता था। आज हर तरह की शिक्षा के लिए विषय विशेषज्ञ है लेकिन व्यवहारिक शिक्षा के लिए कोई नहीं।

आज के शैक्षिक परिवेश में चारों तरफ मूल्यपरक शिक्षा की मांग है, कारण हमारे समाज में मूल्यों की अवधारणा में बदलाव और मूल्यों का क्षरण है। आज की नई पीढ़ी पाश्चात्य संस्कृति के कुप्रभाव से ग्रसित है। भारतीय जीवन मूल्य ध्वस्त हो रहे हैं। आधुनिक सामाजिक परिवेश में मूल्यपरक शिक्षा की अनिवार्यता अपरिहार्य है। मूल्य परक शिक्षा वह शिक्षा है जिसका उद्देश्य मूल्य केन्द्रित हो। हमें दूसरों के साथ वैसा व्यवहार करना चाहिये जैसा हम दूसरों से चाहते हैं। अर्थात मूल्य वहीं है जो सभी के लिए कल्याणकारी हों। मानव जीवन में मूल्यों का अधिक महत्व है। उसके जीवन का प्रत्येक कार्य किसी न किसी मूल्य से सम्बन्धित रहता है। यह मूल्य वह अपने जीवन के प्रारम्भिक वर्षों से ही सीखने लगता है और धीरे–धीरे ये मूल्य उसके आचार व्यवहार का अंग बन जाते हैं। मूल्य जन्मजात नहीं होते है वरन् समाज में रहकर ही सीखे व अर्जित किये जाते हैं। सामाजिक अन्तः क्रिया से मूल्य सीखे जाते हैं तथा उसके विकास में परिवार, मित्रमण्डली, विद्यालय तथा समाज की भूमिका होती है। विद्यालय में सम्पादित होने वाली प्रत्येक क्रिया में मूल्यों की झलक दिखाई देती है। इसकी अभिव्यक्ति न केवल पाठ्यक्रम में वरन् विद्यार्थियों तथा शिक्षकों के मध्य अन्तःक्रियाओं में भी निहित रहती है।

*वैज्ञानिक आविष्कार एवं औद्योगिकीकरण ने मूल्यों के स्वरूप को परिवर्तित कर दिया है। आज समाज के चारों ओर नैतिक, सामाजिक, सांस्कतिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों में गिरावट देखने को मिलती है। जिस तीव्र गति से हम अपने शाश्वत मूल्यों में अपनी आस्था खोते जा रहे हैं तथा जीवन को सुखी बनाने के लिए जी तोड़ मेहनत कर रहे हैं, वह एक असुरक्षित भविष्य का द्योतक है। एलविन टाफलर ने अपनी पुस्तक फ्यूचर शॉक **(Future Shock)** में लिखा है कि वर्तमान युवा पीढ़ी को भविष्य में किन–किन समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। इसका कोई अनुमान नहीं लगाया जा सकता, क्योंकि समाज में तीव्रता से परिवर्तन हो रहे हैं। अतः शिक्षा इस प्रकार की होनी चाहिए जो व्यक्ति को भविष्य के लिए तैयार करें। मूल्य शिक्षा इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है क्योंकि यह मूल्य शिक्षा ही है व्यक्ति में नैतिक निर्णय लेने की द्वामता और नैतिक दायित्व की क्षमता को उत्पन्न करती है और इस शताब्दी में सुखद भविष्य को सुनिश्चित करने के लिए आधुनिक व पुरातन मूल्यों में समन्वय लाने के लिए मूल्यों की शिक्षा अत्यन्त आवश्यक है। समाज का प्रतिनिधित्व करने वाली संस्थाओं को मूल्यों के विकास पर जोर देना चाहिए। विद्यालयों में मूल्यपरक क्रियाओं का आयोजन होना चाहिए जिससे छात्र प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से अपने आचार व व्यवहार में मूल्यों को सामाहित कर सके। क्योंकि मूल्यों को पढ़ाया नहीं जा सकता है विद्यालय, समाज, में आयोजित होने वाली क्रियाओं के माध्यम से त्याग, सेवा, कर्तव्य, निष्ठा, नेतृत्व, श्रम की गरिमा, देश प्रेम आदि मूल्यों का विकास किया जा सकता है।*

शिक्षा एक सापेक्ष चेतन अथवा अचेतन मनावैज्ञानिक, सामाजिक, वैज्ञानिक दार्शनिक एवं जीवन मूल्यों सम्बन्धी प्रक्रिया है जिसके द्वारा सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास सम्भव होता है। जिसके द्वार ही हमारे ऋषि मुनियों और धर्माचारों ने नीतिपरक शिक्षा का प्रसार किया जिससे हम सचरित्र गुणवान

* एसोसिएट प्रोफेसर, अध्यापक शिक्षा विभाग, डी0 ए0 वी0 (पी0जी0) कालेज, मुजफ्फरनगर

विकासोन्मुख हो सके। पहले एक ही शिक्षक सब तरह की शिक्षा (नैतिक, व्यवहारिक, सामाजिक, विकासोन्मुखी, वैज्ञानिक एवं तकनीकी शिक्षा) देता था। आज हर तरह की शिक्षा के लिए विषय विशेषज्ञ है लेकिन व्यवहारिक शिक्षा के लिए कोई नहीं।

आज के शैक्षिक परिवेश में चारों तरफ मूल्यपरक शिक्षा की मांग है, कारण हमारे समाज में मूल्यों की अवधारणा में बदलाव और मूल्यों का क्षरण है। आज की नई पीढ़ी पाश्चात्य संस्कृति के कुप्रभाव से ग्रसित है। भारतीय जीवन मूल्य ध्वस्त हो रहे हैं। आधुनिक सामाजिक परिवेश में मूल्यपरक शिक्षा की अनिवार्यता अपरिहार्य है। मूल्य परक शिक्षा वह शिक्षा है जिसका उद्देश्य मूल्य केन्द्रित हो। हमें दूसरों के साथ वैसा व्यवहार करना चाहिये जैसा हम दूसरों से चाहते हैं। अर्थात मूल्य वहीं है जो सभी के लिए कल्याणकारी हों। मानव जीवन में मूल्यों का अधिक महत्व है। उसके जीवन का प्रत्येक कार्य किसी न किसी मूल्य से सम्बन्धित रहता है। यह मूल्य वह अपने जीवन के प्रारम्भिक वर्षों से ही सीखने लगता है और धीरे–धीरे ये मूल्य उसके आचार व्यवहार का अंग बन जाते हैं। मूल्य जन्मजात नहीं होते है वरन् समाज में रहकर ही सीखे व अर्जित किये जाते हैं। सामाजिक अन्तः क्रिया से मूल्य सीखे जाते हैं तथा उसके विकास में परिवार, मित्रमण्डली, विद्यालय तथा समाज की भूमिका होती है। विद्यालय में सम्पादित होने वाली प्रत्येक क्रिया में मूल्यों की झलक दिखाई देती है।इसकी अभिव्यक्ति न केवल पाठ्यक्रम में वरन् विद्यार्थियों तथा शिक्षकों के मध्य अन्तःक्रियाओं में भी निहित रहती है।

वैज्ञानिक आविष्कार एवं औद्योगिकीकरण ने मूल्यों के स्वरूप को परिवर्तित कर दिया है। आज समाज के चारों ओर नैतिक, सामाजिक, सांस्कतिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों में गिरावट देखने को मिलती है। जिस तीव्र गति से हम अपने शाश्वत मूल्यों में अपनी आस्था खोते जा रहे हैं तथा जीवन को सुखी बनाने के लिए जी तोड़ मेहनत कर रहे हैं, वह एक असुरक्षित भविष्य का द्योतक है। एलविन टाफलर ने अपनी पुस्तक फ्यूचर शॉक (Future Shock) में लिखा है कि वर्तमान युवा पीढ़ी को भविष्य में किन–किन समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। इसका कोई अनुमान नहीं लगाया जा सकता, क्योंकि समाज में तीव्रता से परिवर्तन हो रहे हैं। अतः शिक्षा इस प्रकार की होनी चाहिए जो व्यक्ति को भविष्य के लिए तैयार करें। मूल्य शिक्षा इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है क्योंकि यह मूल्य शिक्षा ही है व्यक्ति में नैतिक निर्णय लेने की द्वामता और नैतिक दायित्व की क्षमता को उत्पन्न करती है।

आधुनिक सामाजिक परिवेश की विसंगतियों एवं भौतिकवादी प्रवृत्तियों के कारण आज बालक घर से ही कुसंस्कारित होकर निकलता है और शिक्षा संस्थाओं में प्रवेश लेता है। शिक्षा संस्थाओं से ये अपेक्षा की जाती है कि वे मूल्यपरक तत्वों से बालक के जीवन को प्रेरित करें ताकि वह एक सुयोग्य नागरिक बनकर समाज व राष्ट्र का कल्याण करे। इस कार्य में शिक्षा व्यवस्था, शिक्षा संस्थाओं का परिवेश और शिक्षक की भूमिका अहम होती है। लेकिन देश की अधिकांश शिक्षा संस्थाओं में ऐसा नहीं हो रहा है। आज हम शिक्षित व्यक्ति से यही आशा करते हैं कि उसमें ज्ञान, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, जागरूकता, सहयोग, नैतिकता, करूणा उदारता और अनुशासन हो। आधुनिक भारत में सर्वप्रथम हमें अपने लोकतांत्रिक पौधे की रक्षा करना और उसे सुदृढ़ बनाना है। हमें समाज से जाति, वर्ण, धर्म, वंश, लिंग वर्ग और क्षेत्रीयता आदि का भेद समाप्त करना होगा तथा सभी नागरिकों में समानता, स्वतन्त्रता और सामाजिक न्याय के विश्वास को सुदृढ़ करना होगा। आर्थिक समानता ही सामाजिक न्याय का मूल आधार है। आर्थिक मूल्य की स्थापना के लिए शिक्षा संस्थाओं को अपने पाठ्यक्रम और पाठयेत्तर क्रिया कलापों के माध्यम, से छात्रों की मनोवृत्तियां और दृष्टिकोण में परिवर्तन लाना होगा तभी आर्थिक विषमता का भेदभाव मिट सकेगा।

आज हमारा पारिवारिक जीवन दुखद है, सामाजिक जीवन अस्त–व्यस्त है, राष्ट्रीय जीवन अनुशासन हीन है और अन्तर्राष्ट्रीय जीवन अशान्त है। आज व्यक्ति स्वार्थी, हिंसक, अवसरवादी और कर्तव्य विमुख हो रहा है। परिवार में पति–पत्नी, भाई–बहिन, पिता–पुत्र, पडौसी–पडौसी के सम्बन्ध तनावपूर्ण हैं। पारिवारिक और सामाजिक जीवन में पारस्परिक सहयोग की भावना समाप्त होती जा रही है। भ्रष्टाचार, अनुशासन हीनता, श्रम के प्रति अनास्था की भावना बलवती हो रही है। प्रदर्शन, तोड–फोड, हिंसा, आतंक, समाज व राष्ट्र के अंग बन गये हैं, इससे समाज में तनाव पैदा हो रहा है, हम विनाश की ओर अग्रसर हो रहे हैं। इस सबसे छुटकारा पाने के लिए हमें मूल्य शिक्षा, नैतिकता, व शान्ति

शिक्षा को बढ़ावा देना होगा तभी हम समाज में, राष्ट्र में शान्ति स्थापित कर सकते हैं। कोठारी आयोग (1966) ने कहा था कि आज के युवकों में सामाजिक व नैतिक मूल्यों के प्रति जो अवहेलनात्मक दृष्टिकोण है, उसके कारण ही सामाजिक व नैतिक संघर्ष हो रहे हैं। इसी कारण हमारे लिए यह आवश्यक है कि हम शिक्षा व्यवस्था को मूल्य परक बनाये। मूल्य शिक्षाकी जरूरत के संदर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में कहा गया है कि ''हमारे बहुवर्गीय समाज में शिक्षा को सर्वव्यापी और शाश्वत मूल्यों को प्रोत्साहित करना चाहिए जिससे भारतीय जन में राष्ट्रीय एकता की भावना बढे और संकीर्ण सम्प्रदायवाद, धार्मिक अतिवाद, हिसां, अन्धविश्वास व भाग्यवद को समाप्त किया जा सके। हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि मनुष्य अकेला शून्य में निवास करने वाला प्राणी नहीं है। उसकी मूल्य परक शिक्षा उसके विशिष्ट सामाजिक तथा संस्कृतिक संदर्भ से जुड़ी होनी चाहिए और विश्वजनीय व शाश्वत मूल्यों से भी उसका सम्बन्ध होना चाहिए। वैज्ञानिक दृष्टिकोण समानता, पर्यावरण संरक्षण, प्रजातन्त्र, स्वतन्त्रता, बन्धुत्व, समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता आदि मूल्यों की शिक्षा सभी स्तरों के लिए आवश्यक है। प्रारम्भिक स्तर पर मूल्य परक शिक्षा ठोस गतिविधियों तथा जीवन की परिस्थितियों के अनुरूप होनी चाहिए। माध्यमिक तथा अन्य उच्च स्तरों पर विद्यार्थी स्वयं मूल्यों की तार्किकता को सफल कर उन्हें विचार व कार्य रूप में ढाल सकेंगे।

आज मानवीय मूल्यों के प्रति आस्थाओं के टूटने–बिखरने के कारण सामाजिक एवं नैतिक संकट की स्थिति उत्पन्न हो गयी है। यदि विद्यार्थियों में सामाजिक तथा नैतिक मूल्यों के प्रति आस्था विकसित नहीं की गयी तो भविष्य में समाज में अराजकता और विघटन की स्थिति पैदा होने की सम्भावना है। चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य ने कहा था कि विद्यार्थियों का चरित्र नैतिक शिक्षा से ही सम्भव है और उसी के आधार पर राष्ट्र का विकास सम्भव है ।इस प्रकार अच्छे चरित्र का आधार मूल्य है और किसी भी प्रकार की शिक्षा व्यवस्था मूल्य–विहीन नहीं हो सकती। अतः शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर मूल्यशिक्षादेने की जरूरत है। आधुनिक सामाजिक परिवेश में शान्ति बनाये रखने के लिए मूल्यपरक शिक्षा को स्थान दिया जाये। शान्ति मूल्य शिक्षण के उद्देश्यों को मानव व्यवहार में मूर्त रूप प्रदान करती है। वर्तमान परिपेक्ष्य में समाज व शिक्षण संस्थाओं में बढ़ता हुआ अपराध, हिंसा, घटिया राजनीति, ईर्ष्या–द्वेष, दबाव, तनाव आतंक आदि है। शिक्षण संस्थाओं व कार्य स्थलों में हिंसा केवल शारीरिक हिंसा ही नहीं बल्कि भावनात्मक हिंसा भी है जिसके फलस्वरूप अकेलापन, अवसाद तथा आत्महत्या की प्रवृत्ति विद्यार्थियों में बढती जा रही है। अनादि काल से प्रत्येक समाज ने शान्ति को एक आवश्यक आदर्श माना है। हमारे अध्यात्मिक गुरू तथा ऋषिमुनी स्वयं में शान्ति के शिक्षक रहे हैं। भारत में आधुनिक शान्ति को ही सामूहिक शांति का स्रोत माना गया है। शान्ति के लिए शिक्षा उस ज्ञान, कौशल, दृष्टिकोण और मूल्यों का पोषण करती है जो शान्ति की संस्कृति का निर्माण और विकास करते हैं। इसके अन्तर्गत मानवीय मूल्यों के संदर्भ में व्यक्ति का शारीरिक, मानसिक, संवेदात्मक, बौद्धिक तथा सामाजिक विकास आता है। शान्ति का प्रारम्भ व्यक्ति से होता है, जो धीरे–धीरे परिवार समुदाय, राष्ट्र और विश्व तक प्रकाशित होता है। विद्यालय का वातावरण ऐसा होना चाहिए जिसमें ऐसे मूल्य व दृष्टिकोण समाहित हो जिससे पाठयक्रम निहित शान्ति तत्वों के शिक्षण–प्रभावों को अधिकतम सीमा तक बढाया जा सके।

नैतिकता का विकास उन विचारों से होता है जिसके द्वारा और जिनके लिए व्यक्ति जीवित रहता है। ऐसे विचारों का अन्तरीकरण समाजिकरण के साथ आवश्यक है। आरम्भ में बालकों को अभिभावकों से करने योग्य और न करने योग्य व्यवहार का स्पष्ट रूप से निर्देश मिलता है किन्तु अनुभव वृद्धि और बार–बार योग्य की आवृत्ति और अयोग्य का त्याग बाहरी निर्देशों को समाप्त कर देता है। करने योग्य व्यवहार के अन्तरीकरण के कारण ऐसे विचार बालक की मानसिक निधि बन जाते हैं। बालक में नैतिकता का बीजारोपण अत्यन्त अल्प आयु से शुरू हो जाता है। यदि इस प्रक्रिया में दण्ड या भय, का प्रयोग किया जाता है तो नैतिकता अन्तरीकृत हो सकती है किन्तु उसके प्रति आदर, प्रेम, समर्पण का भाव नहीं विकसित हो सकेगा। जब नैतिकता सहज रूप में मानसिक धरातल पर रोपित की जाती है तो उसके प्रति समर्थन और निष्ठा उत्पन्न हो जाती है जो बालक के आगामी व्यवहारों को नियंत्रित और निर्देशित करती है जिसके परिणामस्वरूप ऐसा चरित्र गठित होता है जिसमें शाश्वत मूल्यों के मानक स्पष्ट दिखाई देते हैं।

नैतिकता व्यक्ति के दृष्टिकोण को उदात्त और व्यापक बनाती है। व्यक्ति नैतिक आचरण से स्वार्थपरता के संकुचित दायरे से निकल कर व्यक्तिगत दायित्व के प्रति सजग बनता है। नैतिकता विभिन्नता के स्थान पर समरसता का विकास करती है और एक व्यापक चेतना का विकास होता है। नैतिकता के अभाव में भौतिक सम्पन्नता न कल्याणकारी होती है और न सुख, शान्ति प्रदान कर सकती है। केवल भौतिक सम्वृद्धि उस लक्ष्य को प्राप्त नहीं करा सकती जिस हेतु भौतिक सम्पन्नता अर्जन के प्रयास किये जाते हैं। नैतिकता जीवन का वह आधार है जिसके लिए और जिसके द्वारा हम जीते हैं। शिक्षा को जीवन के इस आधार के विकास के लिस विशेष प्रयास करने की आवश्यकता है। आज की शिक्षा द्वारा शिक्षकों, अभिभावकों को निजी उदाहरणों से वह अनुभव छात्रों को सुलभ कराने होंगे जिससे वह औरों के हितों की रक्षा को अपना कर्तव्य समझे।

आधुनिक सामाजिक परिवेश में देखें तो अब शिक्षा के मूल्य बदल चुके हैं। आज के आधुनिक समाज में शिक्षाके व्यापारीकरण से जीवन मूल्यों की नैतिकता का हरण हो चला है। आज आवश्यक है कि इस शताब्दी में सुखद भविष्य को सुनिश्चित करने के लिए आधुनिक व पुरातन मूल्यों में समन्वय लाने के लिए मूल्यों की शिक्षा अत्यन्त आवश्यक है। समाज का प्रतिनिधित्व करने वाली संस्थाओं को मूल्यों के विकास पर जोर देना चाहिए। विद्यालयों में मूल्यपरक क्रियाओं का आयोजन होना चाहिए जिससे छात्र प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से अपने आचार व व्यवहार में मूल्यों को सामाहित कर सके। क्योंकि मूल्यों को पढ़ाया नहीं जा सकता है विद्यालय, समाज, में आयोजित होने वाली क्रियाओं के माध्यम से त्याग, सेवा, कर्तव्य, निष्ठा, नेतृत्व, श्रम की गरिमा, देश प्रेम आदि मूल्यों का विकास किया जा सकता है। आज बदलती परिस्थितियों एवं बाहरी परिवेश के प्रभाव के कारण बालकों में मूल्यों का ह्रास हो रहा है उसे रोकने के लिए अभिवक परिवार में ऐसा वातावरण प्रदान करे जिससे बच्चों में विभिन्न मूल्य और अधिक उत्तम तरीके से विकसित किये जा सके। इसके लिए आवश्यक है कि अभिभावक बच्चों को स्नेह व सुरक्षा प्रदान करें। यदि बच्चों के लालन–पालन पर अधिक ध्यान दें तो निश्चित ही बालकों में उन मूल्यों को विकसित करना सम्भव होगा जिनकी समाज परिकल्पना करता है। शिक्षकीय स्तर पर जो पाठ्यक्रम निर्माण हो वह व्यवहारिकता और रोजगारोन्मुखी एवं मूल्यपरक हो। शिक्षक को नई तकनीकों का ज्ञान हो नित नये शोधों से वाकिफ होते हुए अपने विद्यार्थियों को श्रेष्ठतम पुस्तक उपलब्ध करायपे तथा साथ ही स्वयं के नैतिक विकास के द्वारा छात्रों में सार्वभौमिक मूल्यो को विकसित करें।

सदंर्भ–

1. सक्सैना, एन.आर. स्वरूप (2016) शिक्षा के दार्शनिक व समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य , आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ
2. गुप्ता, आर. (1998) शिक्षा के सिद्धान्त, कानपुर, न्यू पब्लिशिंग हाऊस, 1901971
3. भारतीय शोध पत्रिका वॉल्यूम 28, जुलाई से दिसम्बर 2009।
4. मालवीय, राजीव (2009) शिक्षा के नूतन आयाम, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
5. लाल, रमन बिहारी (2010–11) शिक्षा के दार्शनिक व समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, रस्तोगी पब्लिकेशन्स, मेरठ

●